टी.एल.एम. के खजाने से भाषा बने आसान

(Language made easy from T.L.M.'s treasure)

भावना वर्मा (सहायक अध्यापक)
कंपोजिट स्कूल जहाँनियापुर, ब्लॉक – मोहम्मदपुर,
जनपद – आजमगढ़, उत्तर प्रदेश

पूर्व की स्थिति–

विद्यालय में यह देखा कि कक्षा एक के विद्यार्थियों में प्रारंभिक स्तर पर अनुशासन, स्वच्छता, नियमित उपस्थिति तथा कक्षा में व्यवस्थित रूप से बैठने जैसी आदतों का सामान्यतः आभाव होता हैं। कई बार अभिभावकों द्वारा छोटे बच्चों की स्वच्छता, समयबद्धता एवं नियमित विद्यालय उपस्थिति के प्रति अपेक्षित जागरूकता नहीं दिखाई देती परिणाम स्वरुप बच्चों में सीखने के प्रति तथा विद्यालय के प्रति आकर्षण का अभाव देखने को मिलता है।

इन्हीं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षिका ने यह अनुभव किया कि यदि विद्यालय की प्रारंभिक एवं आधारभूत कक्षा अर्थात कक्षा एक को सुदृढ़ बनाया जाए तो आगे की सभी कक्षाओं का शिक्षण अधिगम अधिक प्रभावी एवं सुचारु से संचालित किया जा सकता है। इसी उद्देश्य के साथ कक्षा 1 के शिक्षण दायित्व का निर्वहन करते हुए, पिछले चार से पांच शैक्षिक सत्र से निरंतर प्रयासरत रहते हुए बच्चों में नियमित विद्यालय आने की आदत विकसित करने स्वच्छता के व्यावहारिक गुणों को अपनाने अनुशासन एवं व्यवस्थित व्यवहार का विकास करने तथा पढ़ाई के प्रति रुचि उत्पन्न करने हेतु विविध नवाचारात्मक गतिविधियों एवं शिक्षण अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) के निर्माण एवं उपयोग पर विशेष रूप से कार्य किया। मेरा निरंतर प्रयास रहा कि मैं विद्यार्थियों को एक आकर्षक आनंददायक एवं प्रेरणादायक शिक्षण वतावरण प्रदान किया जाए। जिससे उनकी सीखने की क्षमता एवं विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास हो सके।

उद्देश्य–

प्रारंभिक शिक्षा में भाषा शिक्षण अति आवश्यक है क्योंकि इससे सभी विषयों का शिक्षण सरल एवं सुगम होता है।भाषायी समझ विकसित करने हेतु आवश्यक है कि इसे प्रारंभिक कक्षाओं से वर्ण, शब्द की पहचान तथा शुद्ध उच्चारण के साथ प्रारंभ किया जाए जिससे बुनियादी भाषा कौशल विकसित हो सके। इस नींव आधारित शिक्षण को बेहतर बनाने हेतु कक्षा एक के समस्त विद्यार्थियों को रोचक वतावरण में प्रोत्साहित करते हुए भाषायी दक्षता को प्राप्त करना ही इस नवाचार का मुख्य उद्देश्य है जिसकी शुरुआत शिक्षिका ने सन् 2022 माह जुलाई से की।

क्रियान्वयन–

इस नवाचार को क्रियान्वित करने के लिए अलग–अलग तरह के टी.एल.एम.आधारित गतिविधियों का निर्माण कर कक्षा में सीखने के माहौल को रोचक और आनंददायक बनाने का प्रयास किया जाता हैं–

अक्षरों की बगिया–

विद्यार्थियों में सर्वप्रथम अक्षर ज्ञान कराने के उद्देश्य से चार्ट और गत्ते की सहायता से अक्षरों (फूल की आकृति में) का निर्माण किया तथा उनको कक्षा–कक्ष की दीवारों पर लगाया। कक्षा में प्रवेश के साथ ही विद्यार्थी अक्षरों की इस बगिया को देखते हैं। जिसका प्रयोग शिक्षिका द्वारा प्रत्येक दिन विद्यार्थियों से अक्षरों की पहचान में करवाया जाता है। भाषा शिक्षण के दौरान वर्ण पहचान कराते समय सिखाए जा रहे वर्णों को अक्षर बगिया में बच्चे ढूंढ कर बहुत ही सहज व रोचक विधि से सीखने का प्रयास करते हैं।

रंगीन अक्षर शीट –

शिक्षिका द्वारा विद्यार्थियों के लिए एक अक्षर शीट डेवलप की गई हैं । इसमें एक सफेद व एक रंगीन A4 पेपर का प्रयोग किया गया है।सफेद पेपर पर अक्षर की आकृति की कटिंग की गई है ।गतिविधि के दौरान खेल–खेल में शिक्षिका द्वारा बच्चों से कटिंग वाले शीट को रंगीन शीट पर रखवाया जाता है। विद्यार्थियों को किसी न किसी अक्षर की आकृति प्राप्त होती है जिस पर उंगली फिराकर विधार्थी अक्षरों की पहचान व उसका अनुभव करता है।

मात्रा डंडी–

विद्यार्थियों को मात्रा की पहचान में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए टी एल एम मात्रा डंडी बनाई गयीहैं । इस डंडी पर रंगीन टेप लपेट कर और फिर चार्ट पेपर पर बनाई गयी मात्राएं काटकर डंडी के एक सिरे पर चिपका दी जाती हैं। भाषा शिक्षण में 'मात्राओं की पहचान' प्रकरण में शिक्षिका द्वारा विद्यार्थियों को क्रम से बुलाकर अक्षरों की बगिया के प्रत्येक अक्षर पर मात्रा डंडी लगाकर मात्रा का उच्चारण करवाया जाता है। इस प्रकार विद्यार्थी खेल–खेल में भी मात्रा डंडियों का प्रयोग करके मात्राओं को सीखने का कार्य स्वयं भी करते हैं।

मात्रा डायरी–

मात्रा डायरी विद्यार्थियों को मात्रा सिखाने में भरपूर मदद करती है। इस डायरी के प्रत्येक पृष्ठ के तीन चौथाई हिस्से पर अक्षर लिखे होते और एक चौथाई हिस्से पर दूसरी तरफ मात्रा बनी होती है। यह डायरी चार्ट पेपर से बनाई गई है। इससे विद्यार्थियों द्वारा एक साथ मात्रा सहित और मात्रा रहित अक्षरों को सीखने का प्रयास किया जाता है। विद्यार्थी पहले शिक्षिका की सहायता से और फिर स्वयं मात्रा डायरी का प्रयोग कर अक्षर व मात्राएँ सीखने का कार्य करते हैं। यह डायरी सभी मात्राओं के लिए बनाई गई हैं।

पिक्चर साउंड –

इस गतिविधि का प्रयोग विद्यार्थियों को चित्र के माध्यम से मात्रा का उच्चारण करवाने में किया जाता है। इस टी.एल.एम. को चार्ट पेपर से बनाया जाता है साथ ही उसमें स्वर एवं उसकी मात्रा भी लगा दी जाती है।पिक्चर साउंड नामक इस गतिविधि की विशेषता यह है कि प्रत्येक चित्र का परिचय उसमें प्रयोग की गई मात्रा से होता है। गतिविधि के दौरान विद्यार्थियों से चित्र की पहचान कराकर मात्रा की ध्वनि निकालने का अभ्यास करवाया जाता है।

चित्र लगाओ शब्द बनाओ–

यह गतिविधि मात्राओं की ड्रिल के लिए है। इसमें विभिन्न वस्तुओं जैसे मछली, अंगूर,जहाज आदि के चित्र बनाए गए हैं और उनमें शामिल वर्णों को अलग–अलग लिखकर उस पर स्टिक लगाकर फ्लैश कार्ड बनाये गए हैं। अब एक गत्ते पर चार्ट चिपकाकर उसके ऊपरी हिस्से में पेपर द्वारा चित्रों के लिए एक पॉकेट और नीचे हिस्से में अक्षरों के लिए पॉकेट बनाई गयी है। शिक्षण के दौरान समूह बनाकर शिक्षिका द्वारा विद्यार्थियों से अपना मनपसंद चित्र चुनने को कहा जाता है चित्र चुनकर विद्यार्थी चित्र पॉकेट में लगाते हैं और चित्र के अनुसार अक्षर ढूंढकर अक्षर पॉकेट में लगाते हुए सम्बंधित चित्र के शब्द को प्रदर्शित करते है। यह सामूहिक गतिविधि दो अक्षर के शब्द जैसे–घर, जग, पेड़, आम आदि के लिए भी बनाई गई है। इस किट का प्रयोग शिक्षिका द्वारा और भी विधियों से करवाया जाता है जैसे मात्रा वाले या बिना मात्रा वाले अक्षरों की पहचान करवाना, तथा स्वयं भी नवीन चित्रों से सम्बंधित अक्षरों को ढूंढ़कर शब्द बनाते है।

अक्षर जादू बोर्ड–

यह वह बोर्ड है जहाँ विद्यार्थी दो अक्षर के शब्दों को मात्रा डंडी की सहायता से बनाना सीखते हैं।सबसे पहले इसमें 10*10 के गत्ते में चार्ट चिपकाते हैं और फिर प्रत्येक कार्ड पर, दो अक्षर जिससे लगभग पांच या उससे ज्यादा शब्द बनते हो लिखा जाता है। बोर्ड के पीछे वर्णों से बने शब्दों को लिखकर छिपा दिया जाता है। गतिविधि के दौरान शिक्षिका द्वारा समूह बनाकर विद्यार्थियों को मात्रा डंडी देकर नए शब्द बनाने के लिए कहा जाता है। विद्यार्थी अपनी सहायता के लिए पीछे छुपे हुए शब्दों का प्रयोग भी कर सकते हैं। जिससे उनमे नवीन शब्दों के सृजन की क्षमता का भी विकास होता हैं और सीखने–सिखाने की क्रिया रोचक हो जाती है।

शाबाशी पिटारा–

विद्यार्थियों को समय–समय पर प्रोत्साहन देने हेतु शिक्षिका द्वारा शाबाशी पिटारा का निर्माण किया गया है। जिसमें 'निपुण ताज' व 'विनर स्टैंड 'शामिल है। 'निपुण ताज' ग्लिटर पेपर से बना है,जिस पर निपुण छात्र और निपुण छात्रा लिखा हुआ है । कक्षा में जो विद्यर्थी निपुण लक्ष्य (दक्षता)को प्राप्त कर लेता है उसको निपुण ताज पहनाकर शिक्षिका द्वारा सम्मानित किया जाता है।इसी क्रम में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान का विनर स्टैंड भी बच्चों को स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करने में सहायक सिद्ध होता है। विनर स्टैंड तीन साइज के अलग–अलग स्टूल को कार्टून (गत्ते) से पैक करके उसे चार्ट पेपर से रैप करके बनाया गया है। यह प्रोत्साहन (शाबाशी पिटारा) बच्चों को आकर्षित करता है और उनमें सकारात्मक भावना भी बढ़ाता है।

प्रभाव–

इस नवाचार आधारित गतिविधि के क्रियान्वयन के परिणाम स्वरुप विद्यार्थी सहजतापूर्वक अक्षरों ,शब्दों की पहचान एवं मात्राओं का शुद्ध व स्पष्ट उच्चारण सीख गये हैं । जिससे उनके अधिगम स्तर में अपेक्षित सुधार हुआ है और विद्यार्थियों में पठन कौशल के विकास के साथ भाषा के प्रति रुचि विकसित हुई है। विद्यार्थियों की उपस्थिति एवं ठहराव में भी सुधार हुआ है। निरंतर प्रयास के द्वारा अधिकांश विद्यार्थी 'निपुण लक्ष्य' को भी निर्धारित समय से पूर्व प्राप्त कर पाए हैं।

सत्र 2024–25 में हमारा विद्यालय 'निपुण विद्यालय घोषित हुआ। जिसका प्रशस्ति पत्र आदरणीय जिलाअधिकारी महोदय द्वारा विद्यालय को प्राप्त हुआ।

कक्षा–1 में वर्षवार 'निपुण ऐप' पर निपुण होते विद्यार्थी:-

सत्र	कक्षा	नामांकन	प्रतिशत
2023–24	1	21	89
2024–25	1	22	91
2025–26	1	24	95